54

नेतृत्व को उसकी चेतावनी

(23:1-12)

अध्याय 23 से 25 तक के मत्ती के अगले तीन अध्यायों में शिक्षा का पांचवां और अन्तिम भाग है। सुसमाचार का यह मुख्य विभाजन यह कहते हुए समाप्त होता है, ''जब यीशु ये बातें कह चुका'' (26:1; देखें 7:28; 11:1; 13:53; 19:1)। इस में प्रभु का लिखित अन्तिम उपदेश (अध्याय 23) और अपने चेलों को उसका व्यक्तिगत संदेश (अध्याय 24; 25) मिलता है। दोनों संदेश यरूशलेम के विनाश और अन्तिम न्याय से सम्बन्धित हवालों से जुड़े हुए हैं।

अध्याय 22 का अन्त इस सार के साथ होता है, ''इसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका। उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ'' (22:46)। यह बात स्पष्टतया यहूदी अगुओं के विषय में कही गई है। उन्होंने उससे अब बात नहीं करनी थी, इस कारण उसने भीड़ से और अपने चेलों से बात की (23:1)। वह कई विषयों पर बात कर सकता था परन्तु उसने अपने ताजा अनुभव के वक्त यहूदी अगुओं अर्थात शास्त्रियों और फरीसियों की शिक्षाओं और व्यवहार पर बात करना चुना। जैसा कि आर. टी. फ्रांस ने अवलोकन किया है, यीशु का इरादा अपने सुनने वालों को फरीसियों की व्यवस्था को मानने की विधियों से मुक्त करने के लिए चुनौती देने हेतु इन लोगों पर से पर्दा हटा देने का था।[1]

यीशु के संदेश को तीन भागों में बांटा गया है। पहले उसने लोगों से शास्त्रियों और फरीसियों की शिक्षाओं को वहां तक मानने को कहा, जहां तक वह सही ढंग से मूसा की शिक्षा देते हैं (23:1-12)। परन्तु उसने इन अगुओं के व्यवहार और आचरण की नकल करने के विरुद्ध चेतावनी दी। वे कपटी थे, क्योंकि वे उन बातों को, जिनकी शिक्षा देते थे, स्वयं नहीं मानते थे। यीशु ने इस बात के सच होने का पूरा विवरण दिया। दूसरा, उसने उनके कपटपूर्ण व्यवहार के लिए उन पर सात हाय कहीं (23:13-36)। तीसरा, उसने यरूशलेम के लोगों द्वारा उसे ठुकराने और उनके आने वाले भविष्य पर अफसोस किया (23:37-39)। ई. 70 में रोमियों ने नगर को नष्ट कर देना था।

आज्ञा मानने से इनकार करते हुए दूसरों से आज्ञा मानने को कहना (23:1-4)

[1]तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा, [2]''शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं; [3]इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उन के से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। [4]वे एक ऐसे भारी बोझ को जिस को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्य के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु स्वयं उसे अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते।''

आयत 1. यीशु ने यह संदेश मन्दिर में **भीड़ से और अपने चेलों को दिया**। स्पष्टतया यह दुख भोग सप्ताह का मंगलवार ही था। लूका ने एक फरीसी के साथ भोजन के संदर्भ में यीशु की ये ही बातें लिखीं (लूका 11:37-52)। यीशु उसकी सुनने वाले लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने संदेश में थोड़ा बहुत बदलाव करते हुए उसे दोहराता रहता था।

आयत 2. यीशु उन यहूदी अगुओं के कपट को सामने लाया, जिन्हें परमेश्वर के राज्य के आने की तैयारी में लोगों को मन फिराने में अगुआई करनी चाहिए थी। इन लोगों ने परमेश्वर के नबी (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले) और उसके मसीहा (यीशु) को नकार दिया था। इस कारण उनके नकारात्मक प्रभाव से बहुतों ने परमेश्वर की इच्छा को नकार दिया।

शास्त्री मूलतया कानूनी दस्तावेजों के इंचार्ज या सरकारी अधिकारी होते थे (1 इतिहास 24:6)। निर्वासन के पूर्व के समयों में इस शब्द की कोई धार्मिक प्रासंगिकता नहीं थी। परन्तु निर्वासन के दौरान शास्त्रियों का एक विशेष गुट खड़ा हो गया। ये लोग व्यवस्था की व्याख्या करने और उसे समझाने को समर्पित थे। एज्रा ऐसा ही एक व्यक्ति था (एज्रा 7:6, 11, 12; नहेम्याह 8:1, 4, 9, 13; 12:26, 36)। शास्त्रियों ने हाथ से पवित्र शास्त्र की प्रतियां बनाते-बनाते काफी ज्ञान अर्जित कर लिया था (2:4 पर टिप्पणियां देखें)।

फरीसी लोगों के उदय का सही समय अज्ञात है, परन्तु यह गुट सीरिया के निरंकुश राजा अन्तियोकुस ऐपिफेनस के अत्याचारों के दौरान हुआ होगा, जिसने दूसरी शताब्दी के आरम्भ में यहूदी धर्म को मिटाने का प्रयास किया था। उसने इस्राएल, विशेषकर यरूशलेम को जो यहूदी मत का केन्द्र था, यूनानी धर्म में परिवर्तित करने की कोशिश की।[2] अन्तियोकुस की सेनाओं को अन्ततः मक्काबियों के विद्रोह से भगा दिया गया, यूदाह मक्काबी में इसे ''हथौड़े'' के रूप में माना जाता था (''मक्काबी'' का अर्थ ''हथौड़ा'' है) के नेतृत्व में यरूशलेम पर फिर से दावा करके मन्दिर को शुद्ध किया गया।[3] इन यादगारी समयों के दौरान फरीसी लोगों ने अपने आपको यहूदियों से अलग कर लिया था। चाहे वे व्यवस्था की एक-एक बात को पूरा करने की इच्छा रखते थे पर वे एक बड़ा समूह कभी नहीं बन पाए। परन्तु समय के साथ लोगों के बीच में वे बहुत प्रभावशाली हो गए (3:7 पर टिप्पणियां देखें)।

शास्त्रियों को फरीसियों से अलग करना कठिन है, क्योंकि अधिकतर शास्त्री फरीसी ही होते थे। जैसा कि यहां पता चलता है यीशु आम तौर पर उन्हें एक साथ मिला लेता था (5:20; 12:38; 15:1)। अध्याय 23 में दी गई कई डांटों के कारण हम आमतौर पर शास्त्रियों और फरीसियों पर बुरे लोगों के रूप में होने का ठप्पा लगा देते हैं। परन्तु कुछ लोग जो परमेश्वर को समर्पित थे, उन्हें यीशु और उसके संदेश को ग्रहण करने का ध्यान था (मरकुस 12:32-34; लूका 7:36; 13:31; यूहन्ना 3:1, 2; प्रेरितों 15:5)। यीशु ने सिखाया कि उनमें से अधिकतर अक्खड़, कपटपूर्ण ढंग से हठधर्मी थे।

बाद के रब्बियों के लेखों में फरीसियों में कपट की ओर झुकाव का संकेत मिलता है। द जरूसलेम टालमुड में फरीसियों की चार किस्में बताई गई हैं:

1. ''कंधे वाला फरीसी'' धर्म के किए गए अपने कामों को अपने कंधे पर ले जाता है [ताकि सब देख सकें]।

2. ''ज़रा रुको वाला फरीसी''–''जरा रुकना, ताकि मैं जाकर कोई धार्मिक काम कर सकूं।''
3. ''हिसाब रखने वाला फरीसी''–वह एक काम करता है, जिसका दायित्व उस पर है और काम जो उसका धार्मिक कत्तर्व्य है, और फिर एक को दूसरे से मिलाता है।
4. ''सूम फरीसी''–''जो मुझे दिखाता है कि मैं कैसे बच सकता हूं ताकि मैं कोई धार्मिक काम कर सकूं।''
5. ''मुझे दिखाओ कि मैंने क्या गलत किया है वाला फरीसी''–''मुझे दिखाओ कि मैंने कौन सा पाप किया है और मैं उसके बराबर का धार्मिक फर्ज़ दिखाऊंगा।''
6. ''डरने वाला फरीसी,'' यानी परमेश्वर का भय रखने वाला।
7. ''प्रेम के कारण बना फरीसी,'' यानी परमेश्वर से प्रेम रखने वाला।[4]

शास्त्री और फरीसी **मूसा की गद्दी** [*kathedra*] **पर बैठे** थे। यहूदी रब्बी सिखाते समय औपचारिक रूप में बैठ जाते थे (देखें 5:1; 13:2; 24:3; 26:55; लूका 4:20)। कुछ आराधनालयों में सचमुच में एक गद्दी होती थी, जिसे ''मूसा की गद्दी'' कहा जाता था। कुछ गद्दियां जो संगमरमर या पत्थर की बनी थीं, डेलोस के यूनानी टापू, सीरिया के ड्यूरा यूरोपास और इस्राएल में हम्मात तिब्रियास, खुराजीन और एन गेदी नामक स्थानों पर मिली हैं।[5] आदरणीय रब्बी मण्डली को सिखाते समय मूसा की गद्दी पर बैठते होंगे, जो धार्मिक अधिकार की मानी हुई गद्दी थी। ऐसी नियुक्ति का पुराने नियम में कोई निर्देश नहीं मिलता। यह पद यहूदियों ने अपने आप ही बना लिया था। परन्तु यीशु ने यहूदियों की किसी भी शिक्षा को, जो परमेश्वर के वचन से सम्बन्धित थी, माना और उसका आदर किया।

आयत 3. यीशु ने भीड़ और अपने चेलों को बताया कि शास्त्रियों और फरीसियों की बात सुनें और जो कुछ वे कहते हैं उसे **मानना,** पर **उनके से काम मत करना**। यीशु आम तौर पर फरीसियों की शिक्षा का विरोध करता था (5:17–48; 12:1–8; 15:1–20; 16:5–12; 19:1–12)। इसलिए जब उसने उनकी शिक्षा को मानने की बात कही तो उसके कहने का अर्थ था कि जहां तक वे मूसा की व्यवस्था से मेल खाती शिक्षा देते हैं, वहां तक उनकी बात मानी जाए।

''कपट'' की बेहतरीन परिभाषा यीशु ने ही दी थी, जब उसने कहा, ''**क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं**।'' NIV में इसका अनुवाद इस प्रकार है, ''जिस बात का वे प्रचार करते हैं, उसे स्वयं नहीं मानते।'' इसी विषय को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने लिखा:

> यदि तू यहूदी कहलाता है, और व्यवस्था पर भरोसा रखता है, और परमेश्वर के विषय में घमण्ड करता है। और उसकी इच्छा जानता और व्यवस्था की शिक्षा पाकर उत्तम-उत्तम बातों को प्रिय जानता है। और अपने पर भरोसा रखता है, कि मैं अन्धों का अगुवा, और अंधकार में पड़े हुओं की ज्योति। और बुद्धिहीनों का सिखाने वाला, और बालकों का उपदेशक हूं, और ज्ञान, और सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में है, मुझे मिला है। सो क्या तू जो औरों को सिखाता है, अपने आप को नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है? तू जो कहता है, व्यभिचार न करना, क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो मूरतों से घृणा करता है, क्या आप ही मन्दिरों

को लूटता है। तू जो व्यवस्था न मानकर, परमेश्वर का अनादर करता है? (रोमियों 2:17-23)।

आयत 4. यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों के कपट के कई उद्धरण दिए। पहले तो उसने कहा, **''वे एक ऐसे भारी बोझ[6] को जिस को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्य के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु स्वयं उसे अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते।''** इस रूपक की पृष्ठभूमि उस समय के सामान्य जीवन से ली गई है। लियोन मौरिस ने इसका वर्णन किया है:

> *बोझ* रखना उस बोझ की तैयारी का संकेत देता है, जिसे उठाने वाले जानवर या गुलाम हो सकते हैं; वह बोझ जो उनके द्वारा ले जाए जाने से पहले सुरक्षित डिब्बों में बांधा जाना था। पर यह बेपरवाही से किया जा सकता है, जिसमें बोझ भारी और न उठाए जाने योग्य हो सकता था-जिसे ले जाना और उठाना कठिन था।[7]

''भारी बोझ'' वे कई नियम, कायदे और पाबंदियां थीं, जिन्हें उन्होंने व्यवस्था में ज़ोर दिया था। यह मौखिक व्यवस्था, जिसे कई यहूदी परमेश्वर की ओर से दी गई मानते थे, मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था से अधिक भारी थी (देखें प्रेरितों 15:10)। उदाहरण के लिए यह अद्भुत बात है कि ''तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना''[8] की बात बहुत आसान थी (निर्गमन 20:8) जिसे बोझ में बदला जा सकता था। यहूदी रब्बियों ने सातवें दिन के विश्राम को नियमित करने के लिए कई किताबें बना ली थीं। जब यीशु और उसके चेलों की ओर से सब्त को तोड़ने की आलोचना की गई तो उनकी आलोचना करने वालों ने परमेश्वर की व्यवस्था का नहीं बल्कि मनुष्यों की बनाई हुई परम्पराओं का हवाला दिया था, जो सदियों से विकसित हुई थी (12:1-8; देखें यूहन्ना 5:5-13)। लोगों को इनमें से किसी भी नियम या कायदे का उल्लंघन करने पर दण्ड दिया जाता था, जबकि ये व्यवस्थापक इन बोझों को उंगली से भी सरकाते नहीं थे। वे लोगों को इसे करने को बताने में तो बहुत अच्छे थे पर स्वयं करने में बिल्कुल निकम्मे।

बांधने और खोलने का विचार पतरस और अन्य प्रेरितों के सम्बन्ध में मत्ती में पहले मिलता है (16:19; 18:18 पर टिप्पणियां देखें)। बड़ा अन्तर यह है कि प्रेरितों द्वारा बांधे गए नियम पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिए गए हैं, जबकि फरीसियों द्वारा बांधे गए नियम मनुष्यों के बनाए गए हैं। यीशु यहूदी अगुओं के बिल्कुल विरोध में भी खड़ा होता है। उनके बोझ कठिन और भारी थे जबकि यीशु ने साफ़ कहा कि ''मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है'' (11:30)।

दूसरों को प्रभावित करने के लिए अपनी धार्मिकता दिखाना (23:5-12)

[5]''वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं: वे अपने तावीजों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं। [6]भोज में मुख्य-मुख्य जगहें, और सभा में मुख्य-मुख्य आसन, [7]बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है। [8]परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है, और तुम सब भाई हो। [9]और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।

[10]और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात मसीह। [11]जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। [12]जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।''

आयत 5. पहाड़ी उपदेश में यीशु ने दान देने, प्रार्थना करने और उपवास रखने के द्वारा अपने आपको बढ़ावा देने के तीन फरीसियों के उदाहरण दिए (6:1-18)। यहां उसने उनके जो **अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं** और उदाहरण दिए।

वे अपने तावीज़ों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते थे। ''तावीज'' आयतों वाली चमड़े की छोटी-छोटी डिब्बियां होती थीं, जिन्हें यहूदी लोग अपने माथे या बाईं भुजा पर पहनते थे। माइकल जे. विलकिन्स ने कुमरान में गुफ़ा नम्बर 1 में मिले दो पक्के तावीजों के मामले के साथ-साथ अन्य मामलों के कुछ भागों का वर्णन किया है। एक किस्म लगभग एक इंच लम्बी थी, जिसमें चार छोटी-छोटी पत्रियां रखने के लिए चार छोटे-छोटे खाने बने हुए थे। इनके ऊपर निर्गमन 13:9, 16; व्यवस्थाविवरण 6:8; 11:18 लिखे हुए होंगे। इस प्रकार का तावीज माथे पर पहना जाता था। अन्य प्रकार का तावीज 1/3 इंच होता था और उसमें केवल एक खाना होता था। एक छोटी पत्री में बारीक लिखी चारों आयतें होंगी। यह तावीज बाईं भुजा पर बांधा जाता था।[9]

''तावीज'' (*phulaktērion*) शब्द का अर्थ ''रक्षा'' या ''कवच'' है। इन डिब्बियों से जुड़े दो और शब्द हैं *tefillin* जिसका अर्थ ''प्रार्थनाएं'' और *totaphoth* जिसका अनुवाद व्यवस्थाविवरण 6:8 और 11:18 में ''टीका'' किया गया है। इन चीज़ों का पहना जाना रब्बियों के पवित्र शास्त्र की अक्षरशः व्याख्या के कारण था, जिसमें उन्हें परमेश्वर के नियमों को मानने के लिए अपने हाथों और अपने माथों पर रखने की आज्ञा दी गई थी।[10] ये वास्तव में इस बात के सांकेतिक कथन थे कि परमेश्वर का वचन लोगों के दिलों और मनों में उनके सामने रहना चाहिए। अपने तावीज़ों को चौड़ा करके कुछ यहूदी परमेश्वर के प्रति बड़े समर्पण का संकेत दे रहे थे। आज भी रुढ़िवादी यहूदी अपने माथों पर और अपनी भुजाओं पर शोक की प्रार्थनाओं और अन्य समयों पर चमड़े की डिब्बियां पहनते हैं।

''कोरें'' यहूदियों को परमेश्वर की आज्ञा को मानने और पवित्र रहने की याद दिलाने के लिए पहनी जाती थीं। ये ''कोरें'' या ''झालरें'' (NRSV) परमेश्वर के आदेश को मानते हुए वस्त्र के छोर पर लगाई जाती थीं (गिनती 15:38-40; व्यवस्थाविवरण 22:12)। यीशु स्वयं भी इन्हें पहनता था (9:20; 14:36)। परन्तु कपटी फरीसी इन कोरों को स्वयं को परमेश्वर की व्यवस्था का स्मरण दिलाने के लिए नहीं बल्कि लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने और भक्त दिखने के लिए पहनते थे। जितनी लम्बी झालर होती उतना ही किसी को पवित्र माना जाता था। कुछ धार्मिक अगुओं के वस्त्र आज भी वैसे ही होते हैं।

आयत 6. इसके अलावा यीशु ने कहा, ''**भोज में मुख्य-मुख्य जगहें, और सभा में मुख्य-मुख्य आसन**'' उन्हें भाते हैं। दावत में अतिथियों के लिए अपने सामाजिक महत्व के अनुसार घटते क्रम में बैठने की परम्परा थी।[11] मेजबान के सबसे नज़दीकी स्थानों को सबसे आदरणीय माना जाता था। एक अन्य अवसर पर यीशु ने सम्माननीय स्थानों पर सबकी इच्छा

रखने के खतरे की चेतावनी देने के लिए एक दृष्टांत इस्तेमाल किया है। यदि कोई विवाह के भोज में सम्मान का स्थान अपने आप चुन लेता तो उससे वहां से हटने को कहा जा सकता था, ताकि कोई दूसरा वहां बैठ सके, जो सबसे अधिक अपमानजनक होता होगा। यदि किसी को किसी दूसरी जगह से सम्मान के स्थान पर बैठने को कहा जाए तो यह बड़े सम्मान को दिखाता होगा (लूका 14:7–11)। अपने आपको सम्मान दिलाने की इच्छा करने वालों को नीचा किया जाएगा और अपने आपको दीन करने वालों को ऊंचा किया जाएगा (23:11, 12)। याकूब और यूहन्ना ने राज्य में यीशु के दाहिने और बायें हाथ के सम्मान के स्थान चाहे थे पर उनकी स्वार्थी विनती के लिए उसने उन्हें डांटा था (20:20–23)।

प्राचीन आराधनालयों में बिल्डिंग के सामने या बीच में ऊंचे मंच बनाए होते थे। मंच (*bēma*) में एक मेज भी होता होगा, जहां पवित्र शास्त्र पढ़ने के लिए पत्रियां रखी होतीं (लूका 4:16, 17), मूसा की गद्दी (23:2) और ''मुख्य-मुख्य जगहें'' जिनका यहां उल्लेख है। ये जगहें आराधना सेवा में भाग लेने वालों और प्रसिद्ध अगुओं द्वारा ली जाती थीं। विशेषकर मण्डली के इस्तेमाल के लिए आराधनालय की दीवारों के आस-पास निचली जगहें होती थीं।[12] यीशु ने सबको नज़र आने के लिए मुख्य-मुख्य जगह लेते हुए ध्यान का आकर्षण बनने की इच्छा करने वालों की मंशाओं की निंदा की।

आयत 7. शास्त्रियों और फरीसियों को भी **बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना भाता** था। निंदा आदर पाने की इच्छा की गई है। ''बाजारों'' सामाजिक इकट्ठ के क्षेत्रों को कहा गया है, जहां इन धार्मिक अगुओं को उन्हें सलाम करने वाले लोगों से तारीफ मिलती थी। यहां पर सामान्य अभिवादन से कुछ अधिक ऊंचा किए जाने की बात है।

''रब्बी'' शब्द का अर्थ ''मेरा प्रभु'' या ''मेरा मालिक'' है और यह व्यवस्था के श्रेष्ठ गुरु माने जाने वाले के लिए सम्माननीय पद था। यीशु और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले दोनों को इसी पद से सम्बोधित किया जाता था (मरकुस 9:5; 11:21; यूहन्ना 1:38, 49; 3:2, 26)। जैक पी. लुईस ने इस शब्द के इतिहास का स्मरण किया है:

> *रब्बी* (''मेरा गुरु'') का इस्तेमाल एक सम्माननीय पद के रूप में पहली सदी में ही आरम्भ हुआ था। रब्बियों की परम्परा में गमलीएल ही पहला गुरु था, जिसके लिए रब्बान (रब्बी से भी अधिक सम्माननीय पद) लागू किया गया। टालमुड के समय में छात्र के लिए अपने गुरु को रब्बी कहकर बुलाना आवश्यक था।[13]

आयत 8. यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी कि साथी विश्वासियों के बीच **रब्बी** का पद पाने की इच्छा से अपने आपको ऊंचा न करें। यहूदी मत में शिष्यता के अलग-अलग दर्जे होते थे, जिन्हें पास करना होता था और छात्र का अन्तिम उद्देश्य रब्बी बनना ही होता था, जिसके नीचे चेले हों।[14] परन्तु यीशु के अनुयायियों को व्यक्तिगत अभिलाषा न रखने के लिए कहा गया था।

प्रभु उस भूमिका को नज़रअन्दाज़ नहीं कर रहा था, जो कलीसिया में सिखाने वालों ने निभानी थी (प्रेरितों 13:1; 1 कुरिन्थियों 12:28; इफिसियों 4:11; 1 तीमुथियुस 2:7; 3:2; 2 तीमुथियुस 1:11; इब्रानियों 5:12)। इसके विपरीत वह अपने चेलों से दीन बनने और उसके सर्वोच्च अधिकार को मानने को कह रहा था। ऊंचा किए जाने के अर्थ में यीशु ही एकमात्र सच्चा

गुरु था। सच्चाई केवल उसी से निकलती है। अन्य गुरुओं को ज्ञान उसी से मिलता है, जो उसने बताया है (28:18–20; यूहन्ना 14:26; 16:12–15)।

धार्मिक गुरुओं द्वारा अपनाए जाने वाले शीर्षकों का उद्देश्य उन्हें ऊंचा करना है जिनके साथ यह नाम लगता है। यीशु ने मसीही **भाइयों** के बीच समानता पर ज़ोर दिया (देखें 12:48–50; गलातियों 3:28)। परमेश्वर के राज्य के अन्दर कोई मालिक नहीं है यानी इसके लोग सब सेवक ही हैं (20:25–28)। कलीसिया में बड़ा बनने का ढंग सेवा ही है। कोई भी जो अपने आपको ऊंचा करता है, उसे नीचा किया जाएगा और जो अपने आपको सेवा के लिए दीन बनाता है, उसे ऊंचा किया जाएगा। वास्तव में परमेश्वर का ही मूल्यांकन काम आएगा।

आयत 9. यीशु ने धार्मिक अगुवे को **पिता** कहने की निंदा की। यह प्रथा बड़ी पुरानी थी। न्यायियों के समय में भी लेवीय याजक को पिता माना जाता था (न्यायियों 17:10)। एलीशा नबी ने अपने मार्गदर्शक एलिय्याह को "मेरे पिता" कहा था (2 राजाओं 2:12)। इस्राएल के राजा इसी प्रकार से एलीशा को बुलाते थे (2 राजाओं 6:21; 13:14)। रब्बियों के काल में "पिता" पदनाम का इस्तेमाल प्रमुख व्यक्तियों के प्रति आदर दिखाने के लिए किया जाता था।[15]

यीशु सांसारिक पिताओं के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द को गलत नहीं कह रहा था (15:4; 19:19; इफिसियों 6:2; कुलुस्सियों 3:21; इब्रानियों 12:9)। पौलुस अपने आपको उन कुछ लोगों के लिए जिन्हें उसने सुसमाचार के द्वारा जन्म दिलाया था, पिता समान मानता था (1 कुरिन्थियों 4:15; 1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2; तीतुस 1:4)। पतरस मरकुस के साथ जिसे उसने अपने विंग में लिया था, ऐसा ही सम्बन्ध देखता था (1 पतरस 5:13)। यूहन्ना ने ऐसे भाइयों को "हे मेरे बालको" और "हे बालको" कहा (1 यूहन्ना 2:1, 12, 18, 28; 3:7, 18; 4:4; 5:21)। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए इन लोगों ने कभी इस बात पर ज़ोर नहीं दिया कि उन्हें फादर या पिता कहा जाए। केवल एक ही आत्मिक **पिता** यानी फादर है और वह "हमारा पिता जो स्वर्ग में है" है (6:9; देखें 5:48; 6:14, 26, 32; 15:13; 18:35)।

आयत 10. आयत 8 की भावनाएं आयत 10 में दोहराई गई हैं। **स्वामी** के लिए यूनानी शब्द (*kathēgētēs*) का इस्तेमाल नये नियम में केवल यहीं पर हुआ है। इस शब्द का अलग-अलग अनुवाद "लीडर" (NASB), "गुरु" (NKJV) और "शिक्षक" (NRSV) हुआ है। यह "गुरु" (*didaskalos*) के लिए शब्द का निकट पर्यायवाची है। "स्वामी" **मसीह** के लिए सुरक्षित पद है। हमारा आत्मिक स्वामी केवल वही है, जिसकी शिक्षाओं को माना जाना आवश्यक है। बेशक उसका वचन सिखाने वाले और हो सकते हैं।

आयतें 8 से 10 में यीशु दूसरों के ऊपर अपने आपको ऊंचा करने की कुछ लोगों की मानवीय प्रवृत्ति का विरोध कर रहा था। वह अपनी कलीसिया में किसी भी प्रकार के पुरोहित तन्त्र का विरोधी था। कलीसिया में एकमात्र पुरोहित-तन्त्र सिर के रूप में यीशु और पिता के रूप में परमेश्वर है।[16]

आयतें 11, 12. यीशु ने इस भाग का समापन यह कहते हुए किया, "**जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।**" इन शब्दों से अपनी सेवा करने वाले फरीसियों की नकल न करने की लोगों को चेतावनी दी गई, जो लोगों से प्रशंसा

पाने के लिए अपने आपको ऊंचा करते रहते थे। आयत 11 की भाषा 20:26 में पहले कही गई उसकी बात से मेल खाती है: ''परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने।'' आयत 12 का विषय आमतौर पर पवित्र शास्त्र में मिलता है (नीतिवचन 29:23; लूका 14:11; 18:14; फिलिप्पियों 2:6-9; याकूब 4:6; 1 पतरस 5:5, 6)। टालमुड के बाद के लेख इस विषय को दोहराते हैं: ''जो अपने आपको उस पवित्र के आगे, जिसका नाम धन्य है, नम्र करता है, ऊंचा करता है, और जो अपने आपको उसके आगे, जिसका नाम धन्य है, ऊंचा करता है, नम्र करता है।''[17]

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

असली धर्म (अध्याय 23)

मत्ती 23 को आम तौर पर यीशु के उस शब्द के इस्तेमाल के कारण '' 'हाय' का अध्याय'' कहा जाता है (23:13, 14, 15, 16, 23, 25, 27, 29)। *Ouai* शब्द जिसका अनुवाद ''हाय'' हुआ है, यहूदी अगुओं की आत्मिक स्थिति के साथ-साथ प्रतिज्ञा किए हुए न्याय के कारण जो उन पर पड़ने वाला था, प्रभु के अफ़सोस को दर्शाता है। शास्त्री और फरीसी लोग धार्मिक और जोशीले थे, परन्तु उनमें उन गुणों की कमी थी, जो परमेश्वर को स्वीकार्य हैं। इस अध्याय से असली धर्म के पांच सबक सीखे जा सकते हैं।

1. *कोई काम बिना धर्मी हुए भी धार्मिक हो सकता है* (23:1-12)। फरीसी लोग बहुत से धार्मिक काम करते थे, परन्तु आम तौर पर उनके काम केवल मनुष्यों को दिखाने के लिए होते थे। वे अपने तावीज़ चौड़े करते और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते थे। उन्हें सिखाने की अधिकारात्मक पदवी और इससे मिलने वाले सभी लाभ जिसमें आदर के स्थान और श्रद्धा से भरे पद शामिल थे, पसंद थे। उनके कामों के पीछे की मंशा ने उन्हें अमान्य ठहराते थे।

2. *कोई काम बिना उपयोगी हुए धार्मिक हो सकता है* (23:13, 15)। वास्तव में ऐसे काम हानिकारक भी हो सकते हैं। फरीसी लोगों को बदलने में पूरा ज़ोर लगा देते थे। परन्तु उसका परिणाम यह होता था कि वे बदलने वाले लोग उनसे भी भ्रष्ट हो जाते थे, जिन्होंने उन्हें बदला होता था।

3. *कोई काम बिना पर्याप्त हुए धार्मिक हो सकता है* (23:23)। यीशु ने फरीसियों की निंदा छोटी-छोटी बातों में वफ़ादार रहने के लिए नहीं की। यहूदियों के लिए सौंफ और ज़ीरे जैसी छोटी-छोटी बातों का दशमांश देना अच्छी बात मानी जाती थी। इसके बजाय उसने छोटी-छोटी बातों को बड़ा बनाने के लिए उनकी निंदा की। छोटी-छोटी बातों पर तो वे बहुत ज़ोर देते थे परन्तु न्याय, दया और विश्वास जैसी अधिक महत्वपूर्ण बातें को टाल कर देते थे।

4. *कोई काम लग सकता है धार्मिक रूप में दूर की सोच वाला और आदर्शवादी है, परन्तु यदि इसे पूरा न किया जाए तो यह व्यर्थ है* (23:29-36)। फरीसी लोग नबियों की कब्रों का, जिन्हें उनके पूर्वजों ने मार डाला था, बड़ा आदर करते थे; परन्तु उन्होंने अपने मन नहीं बदले थे। उन्होंने भी अपने समय में यीशु और उसके चेलों को मार डाला था, जिन्हें परमेश्वर की ओर से भेजा गया था।

5. उन धार्मिक कामों में जो गलत हैं, लगे रहने वालों के लिए सदा तक गलत रहने की आवश्यकता नहीं है (23:37-39)। वे मन फिराकर परमेश्वर के साथ सम्बन्ध सुधार सकते हैं। पक्के तौर पर प्रभु को नकारने वाले के लिए यह एक भयानक गलती है, परन्तु किसी को भी बिना उद्धार की स्थिति में रहना आवश्यक नहीं है।[18]

फरीसी (अध्याय 23)

फरीसियों की आरम्भिक मंशा यूनानी संस्कृति के हमलों के बीच व्यवस्था के आज्ञापालन को बनाए रखने की थी। ''फरीसी'' या ''अलग किए हुए'' नाम का अर्थ ही पाप से अलगाव है। नये नियम की मसीहियत को बहाल करने और बनाए रखने की अवधारणा को मानने वाले निश्चित रूप से उनके इस भले दर्शन की सराहना कर सकते हैं। तौभी यीशु ने कई कारणों के लिए उन्हें डांटा। हमें सावधान रहना आवश्यक है कि कहीं हम भी वैसे ही गलतियां न करें।

1. वे जो प्रचार करते थे, उसे स्वयं नहीं करते थे (23:2, 3)।
2. उन्होंने दूसरों पर अपनी परम्पराएं ऐसे थोपी थीं, जैसे वे परमेश्वर की आज्ञाएं हों (23:4; देखें 15:1-9)।
3. उन्हें परमेश्वर के साथ अपने नाम के बजाय लोगों में अपने नाम की अधिक चिन्ता थी (23:5-7)।
4. वे लोगों को परमेश्वर के लिए परिवर्तित करने के बजाय उन्हें अपने गुट में परिवर्तित करते थे (23:13, 15)।
5. उन्हें अपनी बात मानने की ज़िम्मेदारी तभी महसूस होती थी जब यह सुविधाजनक हो (23:16-22)।
6. वे आराधना के संस्कारों के माहिर थे, परन्तु ''शुद्ध और पवित्र'' धर्म में अनाड़ी थे (23:23, 24; देखें 25:34-46; याकूब 1:27)।
7. वे बाहर से धर्मी लगते थे पर अन्दरूनी तौर पर उनमें नयापन नहीं आया था (23:25-28)।
8. वे बिना सोचे-समझे अपने पूर्वजों के पाप दोहरा रहे थे (23:29-36)।

डेविड स्टिवर्ट

आधुनिक फरीसीवाद (23:1-12)

मसीही लोगों को फरीसियों की सोच अपनाने के प्रति चौकस रहना आवश्यक है। अंदरूनी के बजाय बाहरी धर्म को ग्रहण करना आसान है। कोई अपने ''रविवार को बहुत अच्छा होना'' पहन सकता है पर आराधना के लिए हो सकता है कि उसका मन तैयार न हो। हो सकता है कि वह मण्डली में आए हुए दूसरे लोगों को जिनके कपड़े साफ़-सुथरे न हों नीचा देखें (याकूब 2:2-4)। प्रार्थना में अगुआई करते हुए उसे विनम्रतापूर्वक परमेश्वर से बातें करने के बजाय मण्डली को प्रभावित करने की चिन्ता हो। वह लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं हो सकता है कि केवल दूसरों को प्रभावित करने के लिए करता हो। कलीसिया की सेवाओं में एक सही सोच दिखाए

पर सप्ताहभर अपनी नैतिकता को आराम करने दे। फरीसियों की सोच वाला व्यक्ति अपने ही महत्व को बढ़ावा देता है। जब भी वह अन्दर आता है, उसका उद्देश्य दूसरों की आवश्यकताओं के लिए सेवा देने के बजाय अपनी ओर ध्यान खींचना होता है। संक्षेप में वह कहता है ''आप हैं'' के बजाय ''यहां मैं हूं'' कहता है।

डेविड स्टिवर्ट

ऊंचे किए गए पद (23:8-10)

कई धार्मिक समूहों ने ऊंचे किए गए पदों से सम्बन्धित यीशु की शिक्षा को नज़रअन्दाज़ कर दिया है। कैथोलिक परम्परा में कलीसिया के लोग अपने अगुओं को आमतौर पर ''फादर'' कहते हैं और उन्हें पाप क्षमा करवाने वाले मध्यस्थ का अधिकार देते हैं। यजमान अंगीकार करने जाता है और कई बार प्रीस्ट से कहता है, ''फादर, मुझे क्षमा कर दो, मैंने पाप किया है।'' इस मामले में प्रीस्ट के पद के साथ-साथ ''फादर'' का शीर्षक एक बनावटी कलर्जी-लेयटी सिस्टम बना देता है, जो भाईचारे की अवधारणा के विपरीत है (23:8)। इसके विपरीत मसीही लोगों को एक-दूसरे के सामने अपने पापों का अंगीकार करने और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा है (याकूब 5:16)। पाप क्षमा करने का अधिकार परमेश्वर पिता का है।

प्रोटेस्टेंट परम्परा में प्रचारक के लिए आमतौर पर ''रैवरेंड'' या पादरी शब्द का इस्तेमाल होता है। अंग्रेज़ी बाइबल KJV के अनुवाद में भजन संहिता 111:9 में केवल एक बार ''Reverend'' शब्द मिलता है। परमेश्वर की बात करते हुए यह आयत कहती है, ''Holy and reverend is his name'' अर्थात ''उसका नाम पवित्र और भय योग्य है।'' इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर का नाम ''रैवरेंड'' है, बल्कि यह है कि उसके नाम का भय माना जाए, जैसा कि व्यवस्था में आज्ञा थी (निर्गमन 20:7)। ऐसी श्रद्धा या भय के योग्य कोई मनुष्य नहीं है।

शीर्षक (23:8-10)

विलकिन्स ने ध्यान दिलाया है कि शीर्षकों के विरुद्ध यीशु की पाबंदियां इन विशेष मुद्दों से सम्बन्धित थीं:

1. *शैक्षणिक घमण्ड।* हमें दूसरों को सुसमाचार बताने के रास्ते ढूंढ़ने चाहिए, पर गुरु के रूप में यीशु का स्थान लेने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए (23:8)।

2. *धार्मिक श्रेष्ठवाद।* हमें नये मसीही लोगों की रक्षा करनी और उन्हें बढ़ावा देना चाहिए पर कभी भी अपने स्वर्गीय पिता के रूप में परमेश्वर का स्थान लेने की कोशिश नहीं करनी चाहिए (23:9)।

3. *अधिकारात्मक नियन्त्रण।* हमें दूसरों को अधिक परिपक्व चेले बनाने के लिए अगुआई करने की इच्छा करनी चाहिए, पर याद रखना चाहिए कि अपनी कलीसिया पर सिर केवल यीशु है (23:10)।[19]

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 323. यह तथ्य कि चेले फरीसियों के प्रशंसक थे, पिछले एक अवसर पर उनकी चिंता से स्पष्ट होता है कि यीशु ने उन्हें ठोकर दिलाई थी (15:12)। [2]1 मक्काबियों 1:20–64. [3]वही, 4:36–58. [4]जरूसलेम टालमुड *सोटह* 5.5; देखें *बेरोक्रोथ* 9.5; टालमुड *सोटह* 22बी। [5]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* सम्पा. क्लिंटन ई. आरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 140 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' विलकिन्स ने खुराज़ीन और डिलोस की गह्वियों के फोटो दिए। [6]कुछ हस्तलिपियों में अतिरिक्त वाक्यांश ''और सहना कठिन'' है (देखें KJV)। यह वाक्यांश नज़र चुकने के कारण किसी शास्त्री द्वारा अचानक मिट गया हो सकता है या इसे लूका 11:46 से डाला गया हो सकता है। (ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. [स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994], 49.) [7]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 573. [8]निर्गमन 16:29; 23:12; 31:13–17; 35:2, 3; लैव्यव्यवस्था 26:34, 35; गिनती 15:32–36; व्यवस्थाविवरण 5:12–15. [9]विलकिन्स, 141. [10]देखें जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 4.8.13; *लैटर्स ऑफ अरिस्टियस* 159.

[11]भूमध्य संसार में पाई जाने वाली इस प्रथा के कई उदाहरण क्रेग एस. कीनर ने *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 542–43 में दोहराए हैं। [12]द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा., ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4:680 में विलियम सेनफोर्ड लेसोर एंड टामारा सी. एस्केनाज़ी, ''सिनागोग।'' [13]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 110; देखें टालमुड *बेराक्रोथ* 3ए; *बाबा क़म्मा* 73बी. [14]विलकिन्स, 142. [15]देखें मिशनाह *पीह* 8.5; टालमुड *बेराक्रोथ* 6ए; जरूसलेम टालमुड *बेसह* 1.7; *जेनेसिस रब्बाह* 12.14. ''पिता'' के लिए अरामी भाषा का शब्द *अब्बा* है (रोमियों 8:15)। मिशनाह में एक पुस्तिका में *एबथ,* अर्थात ''पिता'' है। यह प्रसिद्ध रब्बियों के ज्ञान की बात का संग्रह है। [16]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 215. [17]टालमुड *एरुबिन* 13बी। [18]जैक विल्हेम *RSVP न्यूज़लैटर* (1991) से लिया गया। [19]विलकिन्स, 143.